मुहावरा

मुहावरा एहन सटीक वाक्यांश होइत अछि, जाहिसँ वाक्य सुसंगठित एवं सारगर्भित बनैछ । वस्तुतः मुहावरा लक्षणा तथा व्यंजनासँ अनुप्राणित वाक्यक ओ विशिष्ट अंश थिक जकर अर्थ अभिधेय अर्थसँ सर्वथा विलक्षण होइत अछि ।

मुहावरा भाषाक प्राण मानल गेल अछि । एकर प्रयोगसँ भाषा आकर्षक आ प्रभावशाली बनैत अछि । मुदा मुहावराक स्वतंत्र अस्तित्व नहि अछि, एकर प्रयोग वाक्यक संगहि होइत अछि । यथा - 'हाथ पसारब' फराक रहलासँ ओकर अर्थ होइत भीख माँगब मुदा जखन वाक्यमे ओकर प्रयोग कयल जाइछ तँ ओकर अर्थमे तँ व्यापकता आबिए जाइछ संगहि भाषामे एक लालित्य परिलक्षित होइछ ।

निम्नलिखित मुहावरा छात्रक ज्ञानवर्द्धन हेतु देल जा रहल अछि :

1. अगिलगौन (झगड़ा लगौनिहार) – गोसाइँक बेटा बड़ पैघ अगिलगौन छैक ।
2. अगियाबेताल (साहसी) – घनश्याम काज करबामे बड़ अगियाबेताल अछि ।
3. अगिलकंठ (आगू-आगू बाजब) – अपनासँ प्रबुद्ध लोकक सोझाँ अगिलकंठ बनब अशिष्टताक परिचायक थिक ।
4. अस्सी मोन पानि पड़ब (काज करबासँ असमर्थ होयब)– हल्लुको काज अढ़यलासँ गुल्टेनपर जेना अस्सी मोन पानि पड़ि जाइत छैक ।
5. अपनहि पैरमे कुड़हरि मारब (अपन अनिष्ट अपने करब) – मुखियापर मोकदमा ठोकि घनश्याम अपनहि पैरमे कुड़हरि मारलनि अछि ।
6. अपन सन मुँह होयब (लजायब) – मोकदमामे हारि गेला पर बुधन अपन सन मुँह बना कऽ कचहरीसँ विदा भेलाह ।
7. अंत पायब (थाह पायब) – छत्तीस हाथक अँतरीवला एहि मुखियाक अंत पायब बड़ दुरूह अछि ।
8. आँखि लागब (नीन्द लागब) – स्टेशन पर आँखि लागब हमरा बड़ महग पड़ल, कारण नवका बैग केओ चोरा लेलक ।

9. आकाश पाताल एक करब (कठिन परिश्रम करब) – चुन्नू खेती करबामे आकाश पाताल एक कयने रहैत छथि ।

10. आँचर पसारब (भीख माँगब) – महावीर मंदिर लग अनेक स्त्रीगण आँचर पसारने रहैत छथि ।

11. आगि होयब (तमसायब) – हनुमानक वचन सुनि रावण आगि भऽ गेल ।

12. उठान हारब (निर्बल होयब) – बीस दिनसँ तपेदिकसँ पीड़ित जहाँगीर उठान हारि देने छथि ।

13. उनचासो बसात बहब (चौतरफा विपत्ति) – चुनावमे हारलाक बाद रामनारायणक विरोधमे उनचासो बसात बहय लगलैक ।

14. करेजा फाटब (ईर्ष्या होयब) – रामक उन्नति देखि रतनेशक करेजा फाटय लगलैक ।

15. कोड़ो गनब (व्यर्थमे समय बितायब) – सेवा-निवृत्तिक पश्चात् विभूति घरमे कोड़ो गनैत रहैत छथि ।

16. खाक छानब (अपस्याँत होयब) – नौकरीक हेतु रमेश भरि दिन खाक छनैत रहैत छथि ।

17. खोँइचा छोड़ायब (स्पष्ट गप्प कहब) – हम खोँइचा छोड़ा कऽ कहैत छी जे एहि बेर वोट अहाँकेँ नहि देब ।

18. गराक घेघ (भार भेनाय) – बेरोजगार चन्द्रमोहन परिवारक हेतु गराक घेघ छथि ।

19. गोबर-गणेश (भुसकौल) – चन्द्रशेखर पढ़बा-लिखबामे गोबर-गणेश छथि ।

20. घाव पर नोन छिटब (पीड़ाकेँ आरो बढ़ायब) – परीक्षामे असफल भेला पर पिताक कटु वचन सहब विमलजीक घाव पर नोन छिटब थिक ।

21. घेंट काटब (ठकायब) – टुन्नी बाबूक जेठ भाय हुनक सब पैतृक सम्पत्ति हड़पि हुनक घेंट काटि लेलथिन ।

22. घेंट जोड़ब (संग देब) – नवका सड़कक मरम्मतक काज दिआय सरपंच महोदय बैजूक घेंट जोड़ि देलथिन ।

23. छाती पीटब (दुःखी होयब) – भाइक उन्नति देखि देवकान्त छाती पीटब प्रारम्भ कऽ दैत छथि ।

24. छाती ठंढा होयब (प्रसन्नता होयब) – पड़ोसियाक अवनति देखि महन्थक छाती ठंढा भऽ गेलनि ।

25. जान खायब (तंग करब) – धनेश्वर अपन बेटाक नौकरीक हेतु जान खाय लेलक अछि ।

26. जान छोड़ायब (बचायब) – शत्रुसँ जान छोड़ायब सुलभ नहि होइत अछि ।

27. जी जानसँ (सम्पूर्ण ताकतिसँ) – रजनीश जी जानसँ पढ़बामे लागल रहैत छथि ।

28. जी चोरायब (मोन नहि देब) – सुरेश पढ़बासँ जी चोरबैत छथि ।

29. जी जाँतिकेँ रहब (स्थिर भऽ कऽ रहब)– सुरेश जी जाँतिकेँ रहबामे कुशल छथि ।

30. टाँग अड़ायब (विघ्न बाधा देब) – कमला कान्त घरक सभ काजमे टाँग अड़ाऽ दैत छथि ।

31 टाँग मोड़ब (विश्राम करब) – हम बड़ थाकल छी, कनेक टाँग मोड़ब आवश्यक भऽ गेल अछि ।

32. टाँग रोपब (स्थिर होयब) – रमेश नवका गाड़ी की कीनलाह, एको क्षण घरमे टाँग नहि-रोपैत छथि ।

33. टीक काटब (ठकि लेब) – रमेश अनकर टीक काटबामे व्यस्त रहैत छथि ।

34. ठोर अलगायब (बाजब) – सर्वत्र ठोर अलगायब अनुचित होइछ ।

35 डाँड़ टूटब (असमर्थ होयब) – खेतीक बँहिपूरी कयनिहार भाइक परदेश चलि गेलासँ कृष्णाकान्तक डाँड़ टूटि गेल छनि ।

36. दाँत पीसब (तमसायब) – बौआ एतय दाँत पीसलासँ स्वास्थ्य प्रभावित होयतौक ।

37. नजरि पड़ब (देखब) – बहुत चिकरलहुँ मुदा अहाँक नजरि हमरा पर किएक ने पड़ल ?

38. नाक कटायब (बदनामी) – हौ बाउ! पढ़बा लेल जाइत छह तँ जाह मुदा नाक कटा कऽ अयबाक चेष्टा नहि करिहऽ ।

39. नाक रगड़ब (खोसामद करब) – हमरा ओहिठाम नाक रगड़बासँ काज नहि चलतौक ।

40. पयर धरब (चाटुकारिता) – स्वार्थवश ककरो पयर धऽ लेब आजुक फैशन बनि गेल अछि ।

41. पीठ ठोकब (उत्साह बढ़ायब) – अपना गामक शिक्षक सभ छात्रक पीठ ठोकब अपन कर्तव्य बुझैत छथि ।

42. पीठ देखायब (पाछू दिस भागब) – युद्धमे पीठ देखायब सर्वथा अनुचित थिक ।

43. पीठ पाछु करब (कामसँ हटि जायब) – सामाजिक उत्थानक कामसे पीठ पाछु करब उचित नहि थिक ।

44. पेटमे आगि लागब (भूख लागब) – जखन पेटमे आगि लगैत छैक तखन लोककेँ कोनो दोसर काज नीक नहि लगैत छैक ।

45. पेटमे बिलाड़ि कूदब (अत्यन्त भूख लागब) – जखन ककरो पेटमे बिलाड़ि कूदय लगैत छैक तँ समस्त जंजाल निस्सार बुझाइत छैक ।

46. भौंह चढ़ब (क्रोध करब) – भौंह चढ़ब कोनो नीक बात नहि होइत छैक ।

47. माथ उठायब (भार ग्रहण करब) – पिताक मृत्युक उपरान्त बोधनारायण घरक सब उत्तरदायित्वकेँ माथ उठा लेलनि ।

48. माथ मुड़ायब (ठकायब) – श्याम व्यापार करबाक हेतु परदेश गेलाह मुदा माथ मुड़ायकेँ अयलाह ।

49. मूड़ी काटब (मारि देब) – एखन जकर तकर मूड़ी काटब दैनन्दिनी घटना भऽ गेल अछि ।

50. साँस लेब (आराम करब) – औ कृष्णकान्तजी, एखन जाउ किएक तँ हमरा साँस लेबाक पलखति नहि अछि ।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. मुहावरा ककरा कहल जाइछ ? वाक्यमे प्रयुक्त भऽ ई भाषाकेँ कोना चमत्कृत कऽ दैत अछि ? दू वाक्यमे लिखू ।

2. निम्नलिखित मुहावराक अर्थ लिखि वाक्यमे प्रयोग करू:

श्रीगणेश करब –

नजरि पड़ब –

डाँड़ टूटब –

नाक रगड़ब –

पयर रोपब –

बाँहि पूरब –

हाथ मारब –

नाक कटायब –

पीठ देखायब –

अपन सन मुँह होयब –

कोड़ो गनब –

छाती ठंढा होयब –

दाँत पीसब –

खाक छानब –

लोकोक्ति (कहबी)

साक्षर होथि वा निरक्षर, लोकोक्तिक प्रयोग प्रायः सुदीर्घ कालहिसँ सामान्य जीवनक बाजबमे प्रयुक्त होइत आबि रहल अछि । मुदा साहित्यमे एकर प्रयोग भाषाकेँ रुचिगर आ गागरमे सागर भरबाक लेल होइछ । लोकोक्तिक पाँछा कोनो कथा व घटनाक क्रम होइछ, जे अनायासे प्रस्फुटित भऽ लोकक जिह्वा पर बसि जाइछ आ लोकोक्ति बनि जाइछ। मैथिलीक लोकोक्ति भंडारमे सँ किछु लोकोक्ति निम्नांकित अछि : -

अपन दहीकेँ क्यो अम्मत नहि कहैछ (अपन वस्तुकेँ सब नीके कहैछ) – अपन पैतृक दलानक रमेश ततेक ने महिमामंडन कयलनि जे हुनक मित्रकेँ नहि रहि भेलनि। ओ कहलनि जे अपन दहीकेँ क्यो अम्मत नहि कहैछ ।

अपन खुट्टा पर कुकरो जोड़गर (अपना घरमे सभ बलवान् होइत छथि) – सभ डीही मिलि भगिनमानकेँ मारय गेलथीन । मुदा घर पैसबाक हिम्मत किनको नहि भेलनि। कहबी छैक-अपन खट्टा पर कुकरो जोड़गर होइछ ।

अघायल बककेँ पोठी तीत (पेट भरला पर नीको वस्तु अधलाह बुझि पड़ैछ) – भोजमे जखन लोक भोजन कऽ उठय लगलाह तँ घरबैया रसगुल्ला परसय लेल अयलाह मुदा केओ रसगुल्ला नहि लेलक । एहने ठाम कहबी छैक जे अघालय बककेँ पोठी तीत ।

अनेर गायकेँ राम रखबार (जकरा क्यो नहि देखयवला होइछ ओकरा भगवान् सहायता करैछ) – भिनाउज भेला पर सभ गणेशकेँ हेय दृष्टिसँ देखथि मुदा परिश्रम कऽ ओ उच्च सरकारी पद प्राप्त कयलनि आ चर्चित भेलाह । तेँ कहबी छैक अनेर गायकेँ राम रखबार ।

अनहा गाममे कनहा राजा (मूर्ख समाजमे अल्पज्ञो पण्डित) – गाममे पहिल बेर सूर्यकान्त इन्टरमीडिएट परीक्षा प्रथम श्रेणीसँ पास कऽ सौंसे गाममे चर्चित भऽ गेल छथि। एहने ठाम कहबी छैक अनहा गाममे कनहा राजा ।

अशर्फीक लूटि आ कोइला पर छाप (कीमती वस्तुक क्षति पर ध्यान नहि दऽ तुच्छ वस्तुक रक्षा लेल हरान) – मारकण्डेय बाबूक तीनू बेटा आपस में झगड़ा करैत रहैत छथि। फलतः हुनकर सब पैतृक सम्पत्तिक नाश भऽ गेल । एक दिन कटहर बँटबा लेल तीनू भाइमे फसाद होमय लगलनि ताहि पर गामक बुजुर्ग बौएलाल कहलथिन जे एहने ठाम कहबी छैक अशर्फीक लूटि आ कोइला पर छाप ।

आलसीक लेल गंगा बड़ी दूर (काज नहि करयवला बहाना बनबैछ) – प्राचार्य नव पाठ्यक्रम अनबाक लेल कुमुदकेँ इंटरमीडिएट काउन्सिल जयबाक लेल कहलथिन मुदा ओ जबाब देलथिन जे हमरा ओ कार्यालय नहि देखल अछि । एहने ठाम कहबी छैक आलसी लेल गंगा बड़ी दूर ।

आन्हर कुकुर बसाते भुकय (अज्ञानी व्यक्ति बिनु बुझनहि बाजय लगैछ) – बिलट अल्पज्ञ छथि । जखन-तखन क्यो दू व्यक्ति हुनका सोझाँमे गप्प करैत छथि, तँ हुनका बुझाइत छनि जे ओ लोकनि हमरे खिधांस करैत छथि । तेँ टप्प दऽ किछु बाजि दैत छलाह । एहने ठाम कहबी छैक आन्हर कुकुर बसातेँ भूकय ।

आँखिक देखल आ कानक सूनल (सुनिश्चित बात) – गामभरिक पंच सभ बैसल रहथि ताहिमे श्रीकान्तजी कहलथिन जे आँखिक देखल आ कानक सूनल बात कहै छी जे महाकान्तजी नन्दलालजीकेँ 1000। टाका देने छलथिन ।

आगू नाथ ने पाछू पगहा (अनाथ) – जगमायाक परिवारमे आब क्यो नहि छनि। सभ सम्पत्ति मठ बनयबामे दान दऽ देल, किएक ने–हुनका आगू नाथ ने पाछू पगहा ।

आधा तीतिर आधा बटेर (बेमेल गप्प) – सरस्वती नहि तँ कुशल गृहिणी बनि सकलीह ने कुशल शिक्षिका, आधा तितिर आधा बटेर भऽ कें रहि गेलीह ।

आम खयबासँ काज की आँठी गनबासँ (साध्य दिस ध्यान देबाक चाही नहि कि साधनक) – आलोककेँ घर बनयबाक छनि मुदा टाका हाथपर नहि छनि । हिनक जेठ भाय गाम आयल छलाह आ कहलथिन जे चिन्ता जुनि करह । तोरा आम खयबासँ काज छह की आँठी गनबासँ ।

इसखीक मौगति माघ मास (आडम्बर कयनिहार व्यक्तिकेँ दुःख सहय पड़ैछ) – दिनेश अषाढ़क लगनमे विवाह करबाक लेल सूट पहिरि कऽ सभागाछी गेलाह । घामे तर-बतर भऽ गेलाह मुदा हुनक दुर्भाग्य जे कतहु जोगाड़ नहि बैसलनि । ठीके कहबी छैक इसखीक मौगति माघ मास ।

ई गुड़ खयने कान छेदौने (कोनो काज बाध्यतावश करब) – धर्मनाथजी अपन पुत्रकेँ कहलथिन जे जतबा खयबाक छह से घरमे खा ले, फेर रास्तामे बस पर हम किछु नहि किनबौक, दरभंगा धरि ई गुड़ खयने कान छेदौने रहय पड़तौक ।

ईर्ष्ये नाङरि कटाबी तँ छओ मास व्यथे मरी (इर्ष्याक परिणाम नहि नीक होइछ) – चन्द्रदेव गामक पैघ धनिक लक्ष्मीबाबूक देखाउँस कऽ 20000 मे बरद कीन लेलनि

मुदा दुइए मासमे ओ मरि गेल, एहने ठाम कहबी छैक ईर्ष्ये नाङरि कटाबी तँ छओ मास व्यथे मरी ।

उखरिमे मुँह देल तँ मुसराक डर ! (कठिन काज प्रारम्भ कयलापर पैर पाँछा नहि करबाक चाही) – पँचमहला घर बनयबाक लेल मिश्रजी न्यों देलनि परंच कुल जमा टाका एक महलमे लागि गेलनि ताही पर कामतजी कहलथिन डेराइत किएक छी, जखन काज शुरू कयलहुँ अछि तँ सम्पन्न होयबे करत । बुझल नहि अछि उखरिमे मुँह देल तँ मुसराक डर किएक ।

उचित कहैत घर झगड़ा (उचित बात लोककेँ नीक नहि लगैछ) – पंचक समक्षे तिरपित बजलाह जे मातवर दोषी छथि । तेँ मातवरसँ मतान्तर भऽ जायब स्वाभाविक छल एहने ठाम कहबी छैक उचित कहैत घर झगड़ा ।

उनटे चोर कोतवालकेँ डाँटय (अपन दोष स्वीकार नहि कऽ दोसर पर दोषारोपण) – सड़कक वामाँ भागसँ गणेश पयरे जाइत छलाह । एकटा मोटर साइकिल सवार विपरीत दिशासँ आबि हुनका ठोकर मारि देलकनि आ हुनके पर तामस करय लगलनि । एहने ठाम कहबी छैक उनटे चोर कोतवालकेँ डाँटय ।

उगह चान की लपकह पूरी (शीघ्र लाभक लेल ललायित) – कैलाश चौधरीक बेटाकेँ सचिवालयमे नौकरी भेलनि कि कन्यागतसँ मोल-जोल करय लगलाह । एहने ठाम कहबी छैक उगह चान की लपकह पूरी ।

ऊँटक मुँहमे जीरक फोरन (आवश्यकता बेशी रहला पर थोड़सँ काज नहि चलैछ) – बलराम बाबूकेँ कन्यादान करबाक छनि । जेठ बेटा कन्यादानक लेल मात्र 10,000/- टाका पठा देलथिन, जे ऊँटक मुंहमे जीरक फोरन मात्र भेल ।

एक तँ चोरी दोसर सीनाजोरी (दोषी होइतहुँ दोसरा पर दोषारोपण करब अथवा आँखि देखायब) – नरेन्द्र परीक्षामे नकल करैत रहथि । वीक्षक द्वारा टोकला पर उनटे वीक्षककेँ आरोपित करय लगलाह । एहने ठाम कहबी छैक एक तँ चोरी दोसर सीनाजोरी ।

एक म्यानमे दू तरुआरि (दू प्रतिकूल स्वभाव वला व्यक्ति एक संग नहि रहि सकैछ) – दूटा सहोदर भाइ दू राजनीतिक दलक सदस्य छथि । दुनूमे प्रतिस्पर्धा ओ मतान्तर होइत रहैत छनि । एहने ठाम कहबी छैक– एक म्यानमे दू तरुआरि नहि रहि सकैछ ।

एक सेर मुर्गी, नौ सेर मसाला (महत्त्वहीन वस्तुक लेल अधिक व्यय) – कुर्त्ताक कपड़ा नागेन्द्र अस्सी रुपयामे किनलाह आ सिआइमे सय टाका लगओलनि । एहने ठाम कहबी छैक–एक सेर मुर्गी नौ सेर मसाला ।

एक हाथसँ थपड़ी नहि बजैछ (झंझटक उत्तरदायी दुनू पक्ष होइछ) – फलगू ओ नूनूक त्वंचाहंचमे दिनेश नूनू पर दोषारोपण करय लगलाह जे उचित नहि । कारण एक हाथसँ थपड़ी नहि बजैछ ।

ओझा लेखेँ गाम बताह, गामक लेखेँ ओझा बताह (अपना केँ श्रेष्ठ आ दोसर केँ अधलाह बुझनिहार) – घोघाँइ झा अपनाकेँ परोपट्टाक सभसँ पैघ ज्योतिष बुझैत छलाह मुदा विद्वत् समुदाय हुनका मोजर नहि दैत छलनि एहने ठाम कहबी छैक ओझा लेखेँ गाम बताह, गामक लेखेँ ओझा बताह ।

कतय राजा भोज आ कतय भोजबा तेली (दू अनमेल लोकक तुलना) – लक्ष्मीपुर निवासी अवकाशप्राप्त अभियंता शशिबोध मिश्र अपन बेटाक विवाह साधारण किसान किशोरी मिश्रक बेटीसँ निश्चय कयलनि । गौँआसभ ताहि पर बाजल जे कतय राजा भोज आ कतय भोजबा तेली ।

कटि नहि धोय से भगते होय (बिनु अपेक्षित योग्यताक उच्च पद-प्राप्तिक आशा रखनिहार) – द्वितीय श्रेणीमे एम० ए० होइतहुँ रामानुज प्रोफेसर पदपर नियुक्तिक आशा रखैत छथि । एहने ठाम कहल जाइछ कटि नहि धोय से भगते होय ।

कनही गायक भिन्ने बथान (अयोग्य व्यक्तिक मानसिकता सामान्य लोकसँ भिन्न होइछ) –अनेरे सब ठाम टाँग रोपबाक अभ्यासी, स्वेच्छाचारी स्वभावक दिनेश जखन अपन पिताक बुझओला पर नहि बुझलक तँ ओकरा के बुझओतैक ! एहने ठाम कहबी छैक जे कनही गायक भिन्ने बथान ।

कारी अक्षर महीस बरोबरि (निरक्षर) – विनोद पटनासँ गेल सरकारी पत्र नहि पढ़ि सकलाह । कारण हुनका लेल कारी अक्षर महीस बरोबरि छल ।

करड़ीक थम्ह पर सितुआ चोख (दुर्बलकेँ सभ सतबैछ) – फेकना गामक गरीब व्यक्ति छथि । गामक लोक कखनो हुनकर बाँस काटि लैत छनि तँ क्यो फसिल चरा लैत छनि । एहने ठाम कहबी छैक-करड़ीक थम्ह पर सितुआ चोख ।

कोढ़ि कटनिआकेँ मोटगर आँटी (काज करबामे सुस्ती परन्तु पारिश्रमिक लेबामे अग्रणी) – सभ जऽनमेसँ पैघ आँटी भंगीक रहैत छैक; परन्तु काजमे ओ सबसँ पाँछा रहैत अछि तेँ कहबी प्रचलित छैक जे कोढ़ि कटनिआकेँ मोटगर आँटी ।

काज ने धन्धा अढ़ाइ रोटी बन्धा (बिनु परिश्रमे लाभक प्राप्तिक हेतु इच्छुक व्यक्ति) – राजीव जाधरि पटनामे पढ़लाह , पिता खर्चा दैत रहलथिन । आब पढ़ाई छोड़ि घरपर रहैत छथि मुदा पितासँ ओहिना खर्चा मँगैत छथिन । ताहिपर पिता दबाड़लथिन जे काज ने धन्धा अढ़ाइ रोटी बन्धा ।

कुकुरकेँ कतहु घी पचय (अयोग्य व्यक्ति पदक गरिमा नहि रखैछ) – काशीनाथ जिला परिषदक अध्यक्ष निर्वाचित भेलाह तँ सब पदाधिकारी मिलि गबन करय लगलाह । जाँचमे दोष साबित भेला पर कार्यमुक्त कऽ देल गेलाह । ठीके कहबी छैक जे कुकुरकेँ कतहु घी पचय ।

कुकुरक भागे सीक टूटल (परिस्थितिवश कोनो उच्च पद प्राप्त करब) – मातवर जी उप-मुखिया रहथि, शिवनारायण बाबूक आकस्मिक निधनक पश्चात् मातवरजी चुनावधरि मुखियाक काज करय लगलाह । कहबी छैक कुकुरक भागे सीक टूटल ।

केस उपाड़ने मुर्दा हल्लुक (बेशी आवश्यताक अनुरूप थोड़ मदति) – निशिकान्तकेँ कन्यादान करबाक छलनि । ज्येष्ठ इंजीनियर बालकसँ आशा छलनि जे कन्यादानक खर्च उठओताह । मुदा ओ मात्र 10000 टाका पठाय अपन हाथ ई कहि समटि लेलनि जे हमर एखन पदस्थान अकाज विभागमे अछि । एहने ठाम कहबी छैक केस उपाड़ने मुर्दा हल्लुक।

कूप न आबय पथिकक पास (जिनका काज रहैछ, हुनका प्रयास करय पड़ैछ) – सुनीलकेँ मोहनबाबूसँ टाका लेबाक छल । ओ संवाद पठओलथिन । ताहिपर सुनील कहलथिन–कूप न आबय पथिकक पास ।

खग जानय खगही केर भाषा (संग रहनिहारकेँ संगीक हाल बुझल रहैछ) – भोला द्वारा कतहु जयबाक बात नुकयला पर चिरंजीव बाजि उठलाह- "हमरासँ उड़ाँत जुनि बनू हमरा सबटा बूझल अछि जे अहाँ कतय जायब ।" सरिपहुँ, खग जानय खगही केर भाषा।

खिसिआयल बिलाड़ि धुरखुर नोचय (प्रतिकूल परिस्थितिजन्य रोषक प्रदर्शन निर्बल प्रतीक पर करब) – पति द्वारा फटकार पावि सुमति अपन धीया-पूताकेँ डेङबय लगली। तेँ ने कहबी छैक जे खिसिआयल बिलाड़ि धुरखुर नोचय ।

खुट्टाक बले पड़रू चुकरय (संरक्षकक बल-बूता पर शक्ति प्रदर्शित करब) – जाधरि उमाकान्त बाबू प्राचार्य छलाह, कृष्णमोहनजी जे चाहथि सएह करबा लेथि मुदा

उमाकान्त बाबूक स्थानान्तरण होइतेँ हुनकर चलती गुम भऽ गेल। तेँ ने कहबी छैक जे खुट्टा बले पड़रू चुकरय।

खेत खाय गदहा मारल जाय जोलहा (निर्दोष दण्डित भऽ जाय आ दोषी बाँचि जाय) – खून कयलक गंगाधर आ सजा भेलैक महानन्दकेँ। एहने ठाम कहबी छैक– खेत खाय गदहा मारल जाय जोलहा।

गदहा गेलाह स्वर्ग तँ छान लगले गेलनि (संकटसँ कतहु त्राण नहि) – स्थानीय राजनीतिक कारणे उग्रमोहन अपन स्थानान्तरण अरेरसँ नागदह प्राथमिक विद्यालयमे करा लेलनि मुदा ओहुठाम ओएह स्थिति भेटलनि। तेँ ने कहबी छैक गदहा गेलाह स्वर्ग तँ छान लगले गेलनि।

गाय नहि रहय तँ बड़द दूही (असंभव काज) – डोमन गामक निर्धन व्यक्ति छथि। गामक काली पूजामे हुनका 1000 टाका चन्दा देबाक लेल कहल गेल मुदा ओ कतयसँ दितथि। कहबी छैक गाय नहि रहय तँ बड़द दूही।

गाय बिकायल चरवाहिएमे (लाभ छोड़ि हानि) – नीक जकाँ खेती करबा लेल घूरन बाबू दू जोड़ा बड़द सीतामढ़ी मेलासँ कीनकऽ अनलाह। परन्तु छओ मासक बाद सेवाक अभावमे बरदकेँ घाटा लगाकऽ बेचय पड़लनि। एहने ठाम कहबी छैक गाय बिकायल चरवाहिएमे।

गूड़क मारि धोकड़े जानय (व्यथित व्यक्ति व्यथाक मर्मकेँ बुझैछ) – विवेकानन्द कन्यादान दर कन्यादानसँ तबाह छलाह। एहने व्यथाक भुक्तभोगी सरोजानन्दसँ पुछला पर बजलाह गूड़क मारि धोकड़े जनैछ।

गुरु गुड़, चेला चिन्नी (अपन पूर्ववर्तीसँ आगाँ बढ़ि जायब) – पिता प्रशासनिक पदाधिकारी छलथिन मुदा बेटा आइ. ए. एस. पास कऽ गेलनि। एहने ठाम कहबी छैक गुरु गूड़, चेला चिन्नी।

घर दही तँ बाहरो दही (घरमे पूजनीय तँ बाहरो पूजनीय) – भोरे-भोर रामकेँ एक गोटे सालभरिसँ पैंच लेल पाइ घुरा गेलथिन। ऑफिस गेलाह तँ ज्ञात भेलनि जे हुनक वेतनमे अप्रत्याशित वृद्धि भऽ गेलनि अछि। एहने ठाम कहबी छैक घर दही तँ बाहरो दही।

चलय नहि आबय तँ अङने टेढ़ (अपन दोष नहि देखि दोसरकेँ दोषी कहब) – परीक्षामे जखन कृपानाथ प्रश्नक हल करय लगलाह तँ कतेको प्रश्न नहि बना सकलाह।

घुरिकेँ अयलाह तँ कहलथिन प्रश्नमे अशुद्धि छलैक । एहने ठाम कहबी छैक जे चलय न आबय तँ अङने टेढ़ ।

छोट मुँह पैघ बात (अपना योग्यतासँ फाजिल गप्प करब) – प्राचार्य चपरासीकेँ कोनो काज लेल कहलथिन, तँ नियम कानून ओ सुनाबय लागल । तेँ कहबी छैक छोट मुँह पैघ बात ।

जकर लाठी तकरे महीस (शक्तिक आगाँ झुकय पड़ैछ) – टुनटून बाबू गामक दबंग व्यक्ति छथि । गामक रस्ता बन्द कऽ देलनि अछि । क्यो नहि कहैछ । एहने ठाम कहबी छैक जकर लाठी तकरे महीस ।

थोथीक आगाँ पोथी की (मूर्खक आगाँ विद्वानकेँ चुप रहय पड़ैछ) – पंचैतीमे गामक एकटा मूर्ख ततेक बाजय लागल जे सभकेँ अपन मुँह बन्द करय पड़लनि । तेँ ने कहबी छैक थोथीक आगाँ पोथी की ।

हाँसुक बियाहमे खुरपीक गीत (अप्रासंगिक गप्प) – गीतांजलि गेल छलीह शास्त्रीय गायन प्रतियोगितामे भाग लेमय, मुदा मंच पर व्यावसायिक गीत प्रस्तुत करय लगलीह, बुझि पड़ल जेना केओ हाँसुक बियाहमे खुरपीक गीत गाबि रहल होथि ।

प्रश्न ओ अभ्यास

1. लोकोक्ति ककरा कहल जाइछ ?
2. दू वाक्यमे मुहावरा ओ लोकोक्तिमे अंतर स्पष्ट करब ।
3. निम्नांकित लोकोक्तिकेँ पूरा करू:-
   (i) खग जानय .....
   (ii) सब धन बाइस .....
   (iii) भोजक कालमे .....
   (iv) भोजक काल मे .....
   (v) ठनटे चोर .....
   (vi) विनाशकाले विपरीत .....

(vii) हाँसुक बियाहमे .....

(viii) अपन खुट्टा पर .....

(ix) टिटही टेकलक .....

(x) चोरक मुँह .....

4. निम्नलिखित लोकोक्तिक अर्थ स्पष्ट करैत वाक्यमे प्रयोग करू ।

हाँसुक बियाहमे खुरपीक गीत, सोझ आङुरे घी नहि बहराय, मङ्गनी बड़दक दाँत नहि देखल जाइछ, भेल बियाह मोर करबह की, कुकुरक भागे सीक टूटल, बियाहसँ विधि भारी, बाप गदहिया पूत ब्रह्मचारी, बानर की जानय आदक स्वाद, भोजक कालमे कुम्हड़ रोषब ।

5. निम्नलिखित शब्दार्थसँ सम्बद्ध प्रचलित लोकोक्तिक नाम लिखू

1. अयोग्य व्यक्तिक मानसिकता सामान्य लोकसँ भिन्न होइछ ।
2. संरक्षकक बल-बूता पर शक्ति प्रदर्शित करब ।
3. बेमेल बात
4. निरक्षर ।
5. नीकँ आ अधलाहकेँ एके रंग बुझब ।
6. दोषी होइतहुँ दोसरा पर दोषारोपण करब अथवा आँखि देखायब ।
7. कोनो झंझटक उत्तरदायी दुनू पक्ष होइछ ।
8. प्रतिकूल परिस्थितिजन्य रोषक प्रदर्शन निर्बल प्रतीक पर करब ।